International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 13 Issue 7|| July 2024 || PP. 151-154

किसान आंदोलन: हरित क्रांति के बाद का परिदृश्य

Suresh Mehto
Ph.D. Research Scholar
Department of History
Radha Govind University, Ramgarh, Jharkhand,

सारांश:
1960 के दशक में शुरू हुई हरित क्रांति ने भारतीय कृषि में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया, जिससे खाद्य उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई। हालांकि, इसके साथ ही पर्यावरणीय क्षति, सामाजिक असमानता और क्षेत्रीय विषमता जैसी चुनौतियाँ भी सामने आईं। हरित क्रांति के बाद, भारतीय कृषि को जलवायु परिवर्तन, मृदा क्षरण, जल संकट और किसानों के कर्ज जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) और फसल बीमा जैसी योजनाएँ शुरू की हैं। हाल के वर्षों में जैविक खेती और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तथा इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसी तकनीकी नवाचारों को अपनाने पर जोर दिया जा रहा है। किसान आंदोलनों ने किसानों के अधिकारों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें 2020-21 के कृषि कानूनों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन एक प्रमुख उदाहरण है। यह शोध पत्र हरित क्रांति के बाद भारतीय कृषि के विकास, किसान आंदोलनों के प्रभाव और भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए टिकाऊ एवं समावेशी कृषि नीतियों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

***Keywords*:** *हरित क्रांति, भारतीय कृषि, किसान आंदोलन, टिकाऊ कृषि, खाद्य सुरक्षा, तकनीकी नवाचार, पर्यावरणीय प्रभाव, सामाजिक असमानता, सरकारी नीतियाँ, जैविक खेती।*

प्रस्तावना

कृषि मानव सभ्यता का आधार स्तंभ है, जो हमारे अस्तित्व और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह केवल खेती तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पशुपालन, मत्स्य पालन, वानिकी और बागवानी जैसी गतिविधियाँ भी शामिल हैं। भारत में कृषि का इतिहास लगभग 10,000 वर्ष पुराना है, जो सिंधु घाटी सभ्यता के समय से शुरू होता है (रॉय, 2018)। प्राचीन काल से ही, कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है और आज भी देश की लगभग 60% आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है (कृषि मंत्रालय, 2021)। स्वतंत्रता के बाद, भारत को कृषि क्षेत्र में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। खाद्यान्न की कमी, अकाल और गरीबी प्रमुख समस्याएँ थीं। इन समस्याओं से निपटने के लिए, 1960 के दशक में हरित क्रांति की शुरुआत हुई। डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन, जिन्हें "भारतीय हरित क्रांति के जनक" के रूप में जाना जाता है, ने इस क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (पटेल, 2019)। हरित क्रांति ने उच्च उपज वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों और आधुनिक सिंचाई तकनीकों के उपयोग पर जोर दिया।

हरित क्रांति के परिणामस्वरूप, भारत की कृषि उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। गेहूं और चावल जैसी प्रमुख फसलों की पैदावार में काफी वृद्धि हुई। उदाहरण के लिए, 1965-66 में गेहूं का उत्पादन 10 मिलियन टन था, जो 1970-71 में बढ़कर 23.8 मिलियन टन हो गया (सिंह, 2020)। इस वृद्धि ने भारत को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनने में मदद की। हालांकि, हरित क्रांति के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी रहे हैं। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने मिट्टी की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। भूजल स्तर में गिरावट आई है और जैव विविधता को नुकसान पहुंचा है (गुप्ता, 2017)। इसके अलावा, छोटे और सीमांत किसानों को इस क्रांति का पूरा लाभ नहीं मिल पाया, जिससे कृषि क्षेत्र में असमानता बढ़ी।

वर्तमान में, भारतीय कृषि कई चुनौतियों का सामना कर रही है। जलवायु परिवर्तन, मृदा क्षरण, जल संकट और कृषि ऋण जैसी समस्याएँ किसानों के समक्ष बड़ी चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए, सरकार ने कई योजनाएँ शुरू की हैं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना जैसी पहल किसानों की आय बढ़ाने और कृषि क्षेत्र को मजबूत करने के लिए की गई हैं (कृषि मंत्रालय, 2022)। हाल के वर्षों में, जैविक खेती और प्राकृतिक खेती जैसी टिकाऊ कृषि पद्धतियों पर जोर दिया जा रहा है। ये पद्धतियाँ पर्यावरण के अनुकूल हैं और दीर्घकालिक कृषि स्थिरता सुनिश्चित करती हैं। साथ ही, कृषि में तकनीकी नवाचारों को बढ़ावा दिया जा रहा है। ड्रोन तकनीकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसी तकनीकों का उपयोग कृषि उत्पादकता बढ़ाने और संसाधनों के कुशल उपयोग के लिए किया जा रहा है (शर्मा, 2021)। किसान आंदोलन भारतीय कृषि का एक महत्वपूर्ण पहलू रहे हैं। ये आंदोलन किसानों के अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हाल ही में, 2020-21 में हुआ किसान आंदोलन इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जिसमें किसानों ने कृषि कानूनों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया (मेहता, 2022)। भारतीय कृषि ने लंबा सफर तय किया है और अभी भी विकास की राह पर अग्रसर है। टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाना,

तकनीकी नवाचारों का उपयोग करना और किसानों की आय बढ़ाना वर्तमान समय की प्राथमिकताएँ हैं। भारत की बढ़ती आबादी को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में कृषि क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

हरित क्रांति: कृषि में एक नया युग

हरित क्रांति, जो 1960 के दशक में शुरू हुई, ने कृषि उत्पादकता में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। यह आंदोलन नवीन तकनीकों और उच्च उपज वाली फसल किस्मों के उपयोग पर केंद्रित था, जिसने विकासशील देशों में खाद्य उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि की (Pingali, 2012)। इस क्रांति की नींव 1940 के दशक में रखी गई थी, जब अमेरिकी कृषि वैज्ञानिक नॉर्मन बोरलॉग ने मेक्सिको में एक नई, रोग-प्रतिरोधी गेहूं की किस्म विकसित की। यह किस्म न केवल बीमारियों का प्रतिरोध करती थी, बल्कि इसने उच्च उपज भी दी (Borlaug, 2000)। इस नवाचार ने मेक्सिको को गेहूं उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया और बाद में एक प्रमुख निर्यातक बना दिया। हरित क्रांति की सफलता ने इसे वैश्विक स्तर पर फैलाया। संयुक्त राज्य अमेरिका, जो 1940 के दशक में गेहूं का एक बड़ा आयातक था, 1960 के दशक तक एक प्रमुख निर्यातक बन गया (Evenson & Gollin, 2003)। इस परिवर्तन ने खाद्य सुरक्षा और आर्थिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। भारत में, हरित क्रांति ने 1960 और 1970 के दशक में महत्वपूर्ण प्रगति की। एम.एस. स्वामीनाथन जैसे वैज्ञानिकों के नेतृत्व में, देश ने उच्च उपज वाली गेहूं और चावल की किस्मों को अपनाया, जिसने खाद्य उत्पादन में नाटकीय वृद्धि की (Swaminathan, 2006)। इस प्रगति ने भारत को खाद्यान्न आयात पर निर्भरता से मुक्त किया और कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर ले गया। हालांकि, हरित क्रांति के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी रहे हैं। उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया है। इसके अलावा, पारंपरिक फसल किस्मों की विविधता कम हो गई है, जो जैव विविधता के लिए चिंता का विषय है (Shiva, 1991)। वर्तमान में, हरित क्रांति 2.0 की अवधारणा उभर रही है, जो टिकाऊ कृषि पद्धतियों पर ध्यान केंद्रित करती है। यह नया दृष्टिकोण जैविक खेती, जल संरक्षण, और जलवायु-अनुकूल तकनीकों को बढ़ावा देता है (Pingali, 2012)। निष्कर्षतः, हरित क्रांति ने वैश्विक कृषि को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने खाद्य उत्पादन में वृद्धि की और कई देशों को खाद्य सुरक्षा प्रदान की। हालांकि, भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए, हमें टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों की ओर बढ़ना होगा।

भारत में हरित क्रांति की शुरुआत

1943 में भारत ने एक विनाशकारी खाद्य संकट का सामना किया, जिसे बंगाल अकाल के रूप में जाना जाता है। इस त्रासदी ने पूर्वी भारत में भूख और कुपोषण के कारण लगभग 3 मिलियन लोगों की जान ले ली (सेन, 1981) । यह घटना भारत के लिए एक गंभीर चेतावनी थी और इसने देश की खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता को रेखांकित किया। 1949 और 1965 के बीच, भारत ने प्रति वर्ष 3% की कृषि विकास दर हासिल की (सुब्रमण्यम, 2015)। हालांकि, यह वृद्धि पर्याप्त नहीं थी। 1950 के दशक के मध्य से 1960 के दशक के मध्य तक, भारत खाद्यान्न की कमी का सामना कर रहा था। 1960 के दशक की शुरुआत में कृषि विकास ठहर गया, जिससे देश गंभीर संकट में फंस गया। इन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में, भारत सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। उन्होंने फोर्ड फाउंडेशन और रॉकफेलर फाउंडेशन के अमेरिकी विशेषज्ञों को आमंत्रित किया ताकि वे खाद्य फसलों की समस्या का अध्ययन कर सकें और कृषि उत्पादकता बढ़ाने के उपाय सुझा सकें (पटेल, 2013)। यह निर्णय भारत की कृषि नीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

विशेषज्ञों ने 'भारत का खाद्य संकट और प्रतिक्रिया रणनीतियाँ' शीर्षक से एक व्यापक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट में खाद्य योजनाओं और कार्यक्रमों पर पुनः ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया और सबसे अधिक प्रभावी क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने की सिफारिश की गई (गुप्ता, 2018)। विशेषज्ञों ने उच्च उपज वाले क्षेत्रों में अतिरिक्त निवेश करके कृषि उत्पादकता बढ़ाने की भी सलाह दी। यह दृष्टिकोण भारत की कृषि रणनीति को आकार देने में महत्वपूर्ण साबित हुआ। इन सिफारिशों के आधार पर, भारत सरकार ने हरित क्रांति की शुरुआत की। यह कार्यक्रम आधुनिक कृषि तकनीकों और उच्च उपज वाली किस्मों (HYV) के बीजों के माध्यम से खाद्य उत्पादन में वृद्धि करने पर केंद्रित था (दास, 2020)। हरित क्रांति ने विशेष रूप से गेहूं और चावल जैसी प्रमुख फसलों पर ध्यान दिया, जो भारतीय आहार के मुख्य आधार हैं।

हरित क्रांति के प्रमुख घटकों में शामिल थे: HYV बीजों का उपयोग, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, उर्वरकों और कीटनाशकों का व्यापक उपयोग, और आधुनिक कृषि उपकरणों का प्रयोग (शर्मा, 2017)। इन उपायों ने भारतीय कृषि में एक आमूल-चूल परिवर्तन लाया। HYV बीजों ने उच्च उपज सुनिश्चित की, जबकि बेहतर सिंचाई ने फसल की निरंतरता में सुधार किया। उर्वरकों और कीटनाशकों ने उत्पादकता को बढ़ाया, जबकि आधुनिक उपकरणों ने कृषि प्रक्रियाओं को अधिक कुशल बनाया। इन उपायों के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिससे भारत खाद्य सुरक्षा की ओर अग्रसर हुआ। हरित क्रांति ने न केवल भारत को खाद्य आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में मदद की, बल्कि इसने कृषि क्षेत्र में तकनीकी नवाचार को भी प्रोत्साहित किया। हालांकि हरित क्रांति ने कृषि उत्पादकता में महत्वपूर्ण सुधार किया, इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी थे। इनमें शामिल थे: भूजल स्तर में गिरावट, मिट्टी की उर्वरता में कमी, और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग के कारण पर्यावरणीय चिंताएं (मिश्रा, 2019)। इसके अलावा,

हरित क्रांति के लाभ समान रूप से वितरित नहीं हुए, जिससे क्षेत्रीय असमानताएं बढ़ीं। कुछ क्षेत्रों और बड़े किसानों को अधिक लाभ हुआ, जबकि अन्य पीछे रह गए। हरित क्रांति ने भारत को खाद्य आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह भारत के कृषि इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने देश को खाद्य संकट से उबरने में मदद की। हालांकि, इसके नकारात्मक प्रभावों ने भविष्य की चुनौतियों को भी जन्म दिया।

आज, भारत को टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। यह आवश्यक है कि भारत अपनी कृषि नीतियों को इस तरह से विकसित करे जो न केवल उत्पादकता बढ़ाए, बल्कि पर्यावरण की रक्षा करे और सामाजिक समानता को भी बढ़ावा दे। भविष्य में, जैविक खेती, सटीक कृषि, और जल संरक्षण जैसी पहल महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

हरित क्रांति का प्रभाव

हरित क्रांति ने भारत के कृषि क्षेत्र में एक नया चरण लाया। यह भारत में कृषि समृद्धि का स्वर्ण युग बन गया। बाद में, भारत सरकार ने 1965 में आनुवांशिकीविद् एम.एस. स्वामीनाथन की सहायता से हरित क्रांति की शुरुआत की, जिन्हें व्यापक रूप से भारत में हरित क्रांति के जनक के रूप में पहचाना जाता है। यह क्रांति एक बड़ी सफलता है क्योंकि यह देश की रैंक को दुनिया के घटिया और सबसे गरीब कृषि देश से दुनिया के सबसे अधिक लाभदायक देशों में से एक में बदल देती है।

हरित क्रांति ने उच्च-उत्पादन वाले बीज, रासायनिक उर्वरक, और सिंचाई के आधुनिक तरीकों के उपयोग ने कृषि उत्पादन को नया जीवन दिया। इसके अलावा, कृषि उत्पादकता में वृद्धि ने भारतीय किसानों को अपनी आय बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने में मदद की।

किसान आंदोलन

हरित क्रांति के बाद भारत में किसान आंदोलनों का एक नया युग प्रारंभ हुआ। ये आंदोलन मुख्यतः किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार, उनके उत्पादों के लिए उचित मूल्य और सरकारी नीतियों में परिवर्तन की मांग को लेकर थे। पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में किसान आंदोलनों ने विशेष गति प्राप्त की (सिंह, 2018)। 1960 के दशक में हरित क्रांति ने भारतीय कृषि में महत्वपूर्ण बदलाव लाए। उच्च उपज वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों और आधुनिक सिंचाई तकनीकों के उपयोग ने कृषि उत्पादकता में वृद्धि की। हालांकि, इसने किसानों के बीच आर्थिक असमानता भी बढ़ाई (गुप्ता, 2015)। बड़े और संपन्न किसान नई तकनीकों का लाभ उठा सके, जबकि छोटे और सीमांत किसान पीछे रह गए। 1970 और 1980 के दशक में, किसान आंदोलनों ने नए रूप धारण किए। महाराष्ट्र में शरद जोशी के नेतृत्व में शेतकरी संगठन ने किसानों के लिए बेहतर मूल्य और नीतियों की मांग की (पाटिल, 2012)। तमिलनाडु में, नारायणस्वामी नायडू ने किसानों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई। उत्तर भारत में, महेंद्र सिंह टिकैत ने भारतीय किसान यूनियन की स्थापना की, जो बाद में किसान आंदोलनों का एक प्रमुख केंद्र बन गया (राय, 2019)। 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण के बाद, किसान आंदोलनों ने नए मुद्दों को उठाया। वैश्वीकरण और कॉरपोरेट कृषि के खिलाफ आवाज उठी। किसानों ने बीज पेटेंट, जीएमओ फसलों और कृषि में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रवेश का विरोध किया (शर्मा, 2017)। इस दौरान, किसान आत्महत्याओं की बढ़ती संख्या ने भी देश का ध्यान आकर्षित किया। 2000 के दशक में, किसान आंदोलनों ने जल संसाधनों, भूमि अधिग्रहण और ऋण माफी जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। नर्मदा बचाओ आंदोलन ने बड़े बांधों के निर्माण का विरोध किया, जो किसानों के विस्थापन का कारण बन रहे थे (मेहता, 2016)। 2017 में, महाराष्ट्र के किसानों ने ऋण माफी और फसल बीमा में सुधार की मांग को लेकर विशाल मार्च निकाला। 2020-21 में, नए कृषि कानूनों के खिलाफ किसान आंदोलन ने राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया। दिल्ली की सीमाओं पर लंबे समय तक चले इस विरोध प्रदर्शन ने सरकार को कानून वापस लेने के लिए मजबूर किया (कुमार, 2022)। यह आंदोलन किसानों की एकजुटता और संगठनात्मक क्षमता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण बना। निष्कर्षतः, स्वतंत्रता के बाद से भारत में किसान आंदोलनों ने विभिन्न रूप लिए हैं। ये आंदोलन न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए लड़े, बल्कि राष्ट्रीय कृषि नीतियों को भी प्रभावित किया। आज भी, किसान आंदोलन भारतीय लोकतंत्र और अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने हुए हैं, जो कृषि क्षेत्र में न्याय और समानता की मांग करते हैं।

निष्कर्ष

हरित क्रांति ने भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दी। इसने देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की और कृषि उत्पादन को बढ़ाया। हालाँकि, इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी थे, जैसे सामाजिक असमानता और पर्यावरणीय क्षति। सरकार और नीति निर्माताओं ने इन चुनौतियों का सामना करने के लिए कई उपाय किए। इस प्रकार, हरित क्रांति के साथ-साथ गरीबी उन्मूलन की नीतियों ने ग्रामीण समाज में संतुलन स्थापित करने और असमानता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ

- कुमार, ए. (2022). 2020-21 का किसान आंदोलन: कारण और परिणाम। चंडीगढ़: पंजाब यूनिवर्सिटी प्रेस।
- कुमार, एस. (2022). सस्टेनेबल एग्रीकल्चर इन इंडिया: चैलेंजेस एंड ऑपर्चुनिटीज। इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, 92(3), 301-308।
- गिल, एस.एस. (2004). ग्रीन रिवोल्यूशन एंड इट्स इम्पैक्ट्स ऑन इंडियन एग्रीकल्चर. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स.
- गुप्ता, ए. (2018). द हिस्ट्री ऑफ इंडियाज ग्रीन रेवोल्यूशन: सक्सेसेस, फेल्योर्स एंड सेकंड जनरेशन प्रॉब्लम्स। रूटलेज।
- गुप्ता, एस. (2015). हरित क्रांति और उसके प्रभाव। मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन।
- दास, आर. (2020). एग्रीकल्चरल प्रोडक्टिविटी ग्रोथ इन पोस्ट-ग्रीन रेवोल्यूशन इंडिया। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 55(25), 14-17।
- देसाई, बी.एम. (2002). सस्टेनिंग एग्रीकल्चरल ग्रोथ: रोल ऑफ टेक्नोलॉजी. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड एंड आईबीएच पब्लिशिंग.
- पटेल, आर. (2013). द लॉन्ग ग्रीन रेवोल्यूशन। जर्नल ऑफ पीजेंट स्टडीज, 40(1), 1-63।
- पाटिल, वी. (2012). महाराष्ट्र का शेतकरी आंदोलन। पुणे: सह्याद्री प्रकाशन।
- भल्ला, जी.एस., और सिंह, जी. (2009). इकोनॉमिक लिबरलाइजेशन एंड इंडियन एग्रीकल्चर. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- मिश्रा, पी. (2019). एनवायरनमेंटल कॉन्सीक्वेंसेस ऑफ द ग्रीन रेवोल्यूशन इन इंडिया। जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट, 231, 1332-1340।
- मेहता, एल. (2016). नर्मदा: एक संघर्ष गाथा। भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- राज कृष्ण (1979). इंडियन एग्रीकल्चर: एन ओवरव्यू. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली.
- राय, एम. (2019). उत्तर भारत में किसान संघर्ष। लखनऊ: भारतीय ग्रंथ अकादमी।
- लादेजिंस्की, वुल्फ (1969). द ग्रीन रिवोल्यूशन इन पंजाब. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली.
- शर्मा, एम. (2017). द ग्रीन रेवोल्यूशन इन इंडिया: इम्पैक्ट, लिमिटेशंस एंड द वे फॉरवर्ड। ट्रॉपिकल एग्रोइकोसिस्टम्स, 2(1), 12-19।
- शर्मा, पी. (2017). वैश्वीकरण और भारतीय कृषि। जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- सिंह, आर. (2018). भारत में किसान आंदोलन: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- सुब्रमण्यम, एस. (2015). मॉडर्न इंडियन इकोनॉमिक हिस्ट्री। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- सेन, ए. (1981). पॉवर्टी एंड फैमिन्स: एन एसे ऑन एंटाइटलमेंट एंड डेप्रिवेशन। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।